International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-06-2026, Accepted: 16-07-2026, Published: 31-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 59-60

शोध–पत्र का शीर्षक: डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना

शुभांगी माथुरे
शोधार्थी, डिपार्टमेंट ऑफ़ हिंदी, नार्थ ईस्ट क्रिस्चियन यूनिवर्सिटी, बर्मा कैंप, धिमापुर, नागालैंड, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12203

सारांश
यह शोध–पत्र डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों में निहित राष्ट्रीय चेतना का गहन विश्लेषण करता है। समकालीन हिंदी साहित्य और राजनीति में समान रूप से सक्रिय 'निशंक' जी ने अपने कथा–साहित्य में भारतीय समाज के यथार्थ, मानवीय मूल्यों और राष्ट्र–निर्माण की भावना को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास 'मेजर निराला', 'बीरा', 'पल्लवी' और 'छूट गया पड़ाव' में देशप्रेम, सैनिक जीवन की शौर्यगाथा, सामाजिक विसंगतियों का चित्रण तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
इस अध्ययन का उद्देश्य उनके उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना के विविध आयामों को उजागर करना है—जहाँ एक ओर सैनिकों के बलिदान और साहस को राष्ट्र की अस्मिता से जोड़ा गया है, वहीं दूसरी ओर पर्वतीय समाज की स्त्री–जीवन, सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक समरसता को राष्ट्रीय चेतना का आधार माना गया है। शोध–पत्र में यह भी रेखांकित किया गया है कि शनिशंकश जी का साहित्य जातिवाद, क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता से ऊपर उठकर अखंड भारत की कल्पना करता है।
डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय समाज के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय एकता के जीवंत दस्तावेज हैं। उनका साहित्य पाठकों में अपनी जड़ों के प्रति गौरव और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य–बोध जगाने का कार्य करता है, जिससे राष्ट्रीय चेतना एक व्यापक मानवीय और सांस्कृतिक विमर्श का रूप ले लेती है।

मूल शब्दः राष्ट्रीय चेतना, हिंदी उपन्यास, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, देशप्रेम, सैनिक जीवन

उपन्यास सामाजिक जीवन के यथार्थ को बहुत ही उद्देश्यपूर्ण ढंग से निरूपित करते हैं| डॉ० निशंक ने भी अपने उपन्यासों में पहाड़ों के जीवन का सजीव वर्णन किया है|
समकालीन हिंदी साहित्य और राजनीति में समान रूप से सक्रिय डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' एक बहुआयामी रचनाकार हैं| उनकी कृतियों में भारत की माटी की महक, सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्र के प्रति अगाध निष्ठा दिखाई देती है| 'निशंक' जी का कथा–साहित्य केवल कोरी कल्पना नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज के यथार्थ, मानवीय मूल्यों और राष्ट्रीय अस्मिता का जीवंत दस्तावेज है| उनके उपन्यास 'पल्लवी', 'बीरा', 'मेजर निराला' और 'छूट गया पड़ाव' आदि में राष्ट्रीय चेतना एक मुख्य स्वर के रूप में उभरकर सामने आती है|

शोध के उद्देश्य

- डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों में निहित राष्ट्रीय भावना का विश्लेषण करना|
- विकसित हुई राष्ट्रीय चेतना को समझते हुए उन बिंदुओं को प्रकाश में लाने की कोशिश करना जहाँ पर आलोचकों तथा शोधार्थियों की दृष्टि अब तक नहीं पड़ी थी| ऐसा प्रयास करना है|
- उनके उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों और राष्ट्र–निर्माण के अंतर्संबंधों को समझना|
- समकालीन हिंदी उपन्यास विधा में 'निशंक' जी के योगदान को रेखांकित करना|

मुख्य विषय–विश्लेषण

देशप्रेम और राष्ट्रीय अस्मितारू 'निशंक' जी के उपन्यासों के पात्र राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हैं। उनके कथा–साहित्य में हिमालय की सांस्कृतिक महत्ता, गंगा के प्रति राष्ट्रीय श्रद्धा और भारतीय सीमाओं की सुरक्षा का भाव कूट–कूट कर भरा है।

सैनिक जीवन और शौर्य गाथा: 'मेजर निराला' डॉ० निशंक का पहला उपन्यास है जो वर्ष 2008 में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया| 'मेजर निराला' एक फौजी की जीवन की कहानी पर आधारित है| यह उपन्यास उत्तराखंड के गाँव के एक गरीब परिवार की व्यथा को व्यक्त करता है| भारतीय सेना में देश की रक्षा के लिए उत्तराखंडी युवा हमेशा से ही तत्पर रहा है| हमारे देश के उत्तराखंडी युवाओं ने पाकिस्तान और चीन युद्ध में अपनी शहादत दी थी| हमारे सैनिको ने अपने प्राणों की आहुति दे दी लेकिन अपने उसूलों और स्वाभिमान से समझौता नहीं किया| डॉ० निशंक राष्ट्रभक्ति, शौर्यभावना, बलिदान और अदम्य साहस के प्रखर जीवनमूल्यों की अभियक्ति कराते हुए अपने कथा नायक को राष्ट्र रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पित करने के जज्बे से ओत–प्रोत वीर सेनानायक के रूप में चित्रित किया है|
पर्वतीय आँचल की विभिन्न समस्याओं, उसके समाधानों, पहाड़ो की अचल संपदाएँ, उसकी नैसर्गिकता आम जनजीवन को उपन्यासकार ने बहुत ही प्राकृतिक स्वरुप कर उपन्यास को सार्थक बनाया है|
सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यरू बीरा– वर्ष 2008 में वाणी प्रकाशन द्वारा बीरा डॉ० निशंक के दूसरे उपन्यास के रूप में लोकप्रिय है| 'बीरा' एक नायिका प्रधान उपन्यास है जिसमें सामाजिक, परम्पराओं और पर्वतीय जन जीवन के मूल्यों का बखूबी प्रस्तुतिकरण करते हुए डॉ. निशंक ने पर्वतीय समाज के स्त्री–विमर्श का उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की है| डॉ. निशंक ने इस उपन्यास में 'बीरा' में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति करते हुए पर्वतीय नारी के जीवन का सजीव चित्रण किया है|
पहाड़ की नारी अदम्य जिजीविषा, अनुपम धैर्य, अटूट विश्वास, समर्पण और जीवटता का पर्याय होती है| उसके भीतर जहाँ पहाड़ सी फौलादी जुनून होता है तो बर्फ सी नाजुक कोमल भावों की सरितायें भी प्रवाहमान होती हैं|

बीरा उपन्यास में पर्वतीय जीवन के भोलेपन, ईमानदारी, निश्छलता और सहजता को सजीव रूप में अभिव्यक्त करते हुये डॉ० निशंक स्वयं का दृष्टिकोण भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं| उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से पाठकों के सम्मुख समाज की अच्छाई, बुराई, भेदभाव, रूढ़िवादिता को रखा ताकि पाठक अन्तर्मन में विश्लेषण कर उपन्यास के उद्देश्यों तक पहुँचने का प्रयत्न करे| प्रायः यह देखा गया है कि एक महिला के द्वारा ही सर्वाधिक महिला को प्रताड़ित किया गया| चाहे वह सास के रूप में बहू पर अत्याचार हो, बालिका के जन्म पर संताप हो या देवरानी–जेठानी की आपसी खुन्नस| सबके मूल में स्त्री है लेकिन उपन्यासकार के रूप में डॉ० निशंक ने स्त्री चित्रण के साथ न्याय करते हुये इस उपन्यास में बीरा की चाची के रूढ़िवादी और क्रूर स्वभाव के विपरीत बीरा की मामी का चरित्र इस प्रकार गढ़ा है कि कलुषित मन पर अकलुषितता की विजय होती है और बीरा को मामी के रूप में माँ का स्नेह प्राप्त होता है|

सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता: लेखक का मानना है कि एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण आंतरिक एकता से ही संभव है| उनके उपन्यासों में जातिवाद, क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता से ऊपर उठकर अखंड भारत की कल्पना की गई है|

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: 'निशंक' जी भारतीय सनातन मूल्यों, नैतिक आचरण और ग्रामीण अंचलों की लोक–संस्कृति को राष्ट्रीय चेतना का आधार मानते हैं| उनके उपन्यासों में उत्तराखंड की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के बीच रहने वाले लोगों का जुझारूपन और उनकी राष्ट्रभक्ति का सजीव चित्रण है|

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना भौगोलिक सीमाओं तक सीमित न रहकर एक व्यापक मानवीय और सांस्कृतिक विमर्श का रूप ले लेती है| उनका साहित्य देश के नागरिकों में अपनी जड़ों के प्रति गौरव और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का बोध कराता है| यही कारण है कि देश–विदेश के कई विश्वविद्यालयों में उनके इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण पर व्यापक शोध कार्य हो रहा है|

सन्दर्भ सूची

1. पोखरियाल 'निशंक', डॉ. रमेश, बीरा (उपन्यास), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. पोखरियाल 'निशंक', डॉ. रमेश, मेजर निराला (उपन्यास), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा अरुण सर्जन के बीज में डॉ. निशंक का प्रेरणा मूलक चिंतक, हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर संस्करण, 2020
4. डॉ राम– देश प्रेम, प्रकृति और पहाड़ः निशंक की कविताओं में बिंब, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2020
5. गोपाल शर्मा निशंक एक अतरंग पाठ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2021
6. रमेश पोखरियाल 'निशंक' तुम भी मेरे साथ चलो। (राष्ट्रीय स्मिता की कविताएँ) प्रकाशक हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर (उ० प्र०) संस्करण 1986